P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-10* January- 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

शोध प्रतिवेदन लेखन
Research Report Writing

अजीत (Ajit)
सहायक आचार्य,
Assistant Professor,
राजनीति विज्ञान विभाग,
Dept. of Political Science,
राजकीय कमला मोदी महिला महाविद्यालय,
Government Kamla Modi Girls College,
नीमकाथाना, राजस्थान, भारत
Neemkathana, Rajasthan, India

सारांश

शोध प्रतिवेदन में शोध के परिणामों व निष्कर्षो को अभिव्यक्त किया जाता हैं। ज्ञान अभिवृद्धि, दूसरों के निष्कर्षो का प्रमाणीकरण तथा उपाधि प्राप्त करना शोध प्रतिवेदन के उद्देश्य हैं। अभिगम तथा प्रस्तुतीकरण के आधार पर शोध प्रतिवेदन को वर्गीकृत किया जाता हैं। एक अच्छा शोध प्रतिवेदन सुन्दर व आकर्षक स्वरूप में होता हैं, स्पष्ट व सुग्राहय स्वरूप में होता हैं। इसमें तथ्यों का विश्लेषण वैज्ञानिकता व तर्क के आधार पर किया जाता हैं, तथ्यों की पुनरावृति नहीं होती तथा यह ऐसी सूचनायें देता हैं जो पक्षपात विहीन होती हैं। शोध प्रतिवेदन के प्रारूप में प्रारम्भिक खण्ड होता हैं जिसमें आवरण पृष्ठ होता हैं जिसमें अध्ययन का शीर्षक व प्रस्तावना का आमुख होता हैं जबकि प्रतिवेदन के मुख्य भाग में अध्ययन की अभिकल्पना, आंकडो का विश्लेषण, सारांश तथा संदर्भ खण्ड निहित रहता हैं। शोध प्रतिवेदन की प्रमुख समस्यायें हैं बौद्धिक स्तर, भाषा, संकल्पना व सत्य कहने की समस्या आदि। इन समस्याओं को दूर कर एक अच्छा शोध प्रतिवेदन लिखा जा सकता हैं।

The results and conclusions of research are expressed in research report.the purpose of research is to enhance the knowledge,authenticate the conclusions of others and to obtain the degree.research report is classified on the basis of approach and presentation.a good research report is in good attractive form ,it is explicit and comprehensible and the analysis of the facts is based on scientificity and logic.facts are not repeated and are unbiased.the format of research report comprises commencement clause in which there is cover page and it contains the title and prologue of thr preamble.the main part of the body comprises hypothesis,analysis of data, summary and reference section.the main problem of the research report are the language, hypothesis of intellectual level and the problem of speaking truth etc. A good research report can be written by eliminating these problems.

मुख्य शब्द : प्रतिवेदन, उपकल्पना, सामान्यीकरण, प्रतिदर्श, चर व उपचर, ।
Keywords: Report, Hypothesis, Generalization, Sampling, Variable and Sub Variable.

प्रस्तावना

शोध प्रतिवेदन शोध प्रक्रिया का अन्तिम पड़ाव है। शोध का स्तर कितना ऊँचा हो अगर उसे प्रतिवेदन में प्रस्तुत नहीं किया गया तो उस शोध का कोई महत्व नहीं होता। प्रतिवेदन के द्वारा सामाजिक वैज्ञानिक अपने सारे प्रयत्न ओर उसके निष्कर्षों को दूसरों को बताता है। पहले किया हुआ आगे वाले शोध के लिए नींव का काम करता है। वैज्ञानिक शोध में विभिन्न शोध कार्यों के बीच यह तारतम्य बहुत महत्वपूर्ण है। प्रतिवेदन के द्वारा यह तारतम्य बनता है। संसार के किसी भाग में कोई भी शोध हो, उसके प्रतिवेदन के प्रकाशन के बाद वह संसार के वैज्ञानिक कोष का अंग बन जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रतिवेदन के माध्यम से शोध परिणामों को व्यक्त करना किसी भी शोध गतिविधियों का प्रमुख पक्ष है। प्रतिवेदन में सामग्री का व्यवस्थापन इस तरह से किया जाता कि दूसरे सहयोगियों एवं मूल्यांकन कर्त्ताओं को शोध की समस्याओं, उद्देश्यों, महत्वों, परिसीमाओं, तथ्य संकलन एवं निष्कर्षों का आसानी से ज्ञान हो सके।

अतः शोधकर्ता के लिए यह आवश्यक है कि उसे शोध प्रतिवेदन की लेखन शैली उसके सिद्धांतों व तकनीकों की अच्छी जानकारी हो क्योंकि मान्य सिद्धांतों की जानकारी होने से एक अर्थवान व प्रभावशाली शोध प्रतिवेदन लिखा जा सकता है। शोध प्रतिवेदन दूसरों के अध्यनार्थ लिखा जाता है। अतः इसे

अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए अन्यथा यह आलोचना का पात्र होने के साथ–साथ शोधकर्ता के परिश्रम का पूरा मूल्यांकन भी न कर सकेगा। इसलिए प्रतिवेदन इस प्रकार तैयार करना चाहिए कि ज्ञान के भंडार में वृद्धि करे।

साहित्यावलोकन

'रिसर्च मेथोडोलोजी मेथड्स एण्ड टेक्नीक्स' के लेखक सी.आर. कोठारी ने शोध प्रतिवेदन के महत्व, शोध प्रतिवेदन लेखन के लिए विभिन्न चरणों, शोध प्रतिवेदन के प्रारूपण तथा शोध प्रतिवेदन के विभिन्न प्रकारों पर प्रकाश डाला हैं। डॉ. विजय जरारे द्वारा लिखित पुस्तक शोध प्रणाली में शोध प्रतिवेदन को परिभाषित करते हुए इसकी प्रकृति वर्गीकरण का विस्तृत विवेचन किया गया हैं। गुडे डब्लू जे हॉट, पी.के. ने अपनी पुस्तक 'मेथड्स इन सोशल रिसर्च' में शोध प्रतिवेदन के उद्देश्यों, उसके प्रारम्भिक व मुख्य खण्ड, प्रतिवेदन लेखन के सामान्य नियम, समस्या तथा सावधानियों की विस्तृत व्याख्या की हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध आलेख में शोध प्रतिवेदन के अर्थ एवं परिभाषा, प्रकार, प्रारूप, अच्छे प्रतिवेदन को कैसे लिखा जायें, शोध प्रतिवेदन में भाषा के महत्व, शोध प्रतिवेदन लिखने की बारिकियाँ तथा शोध प्रतिवेदन लेखन में आने वाली समस्याओं तथा ध्यान में रखी जाने वाली सावधानियों के बारे में जानने व समझने का प्रयास किया गया हैं।

शोध प्राविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में विवरणात्मक व विवेचनात्मक शोध प्राविधि के माध्यम से अर्थ, परिभाषा तथा प्रारूपण को समझने तथा विश्लेषात्मक व विचारात्मक प्राविधि द्वारा एक अच्छे शोध प्रतिवेदन की विशेषताओं, समस्याओं तथा सावधानियों के बारे में समझने का विनम्र प्रयास किया गया हैं।

अर्थ एवं परिभाषा

गुडे व हॉट्ट के शब्दों में ''प्रतिवेदन लिखना शोध का अन्तिम चरण है और इसका उद्देश्य इच्छा रखने वाले पाठक तक शोध परिणाम पहुंचाना है। पाठक जिन्हें पढ़कर समझ सके इस तरह से शोध को व्यवस्थित एवं विस्तार प्रस्तुत करना है। इसे पढ़कर पाठक तथ्य समझ सके और स्वयं शोध निष्कर्षों की प्रमाणिकता की जांच करने योग्य हो सके। गुडे व हॉट्ट की परिभाषा से प्रतिध्वनित अर्थ प्रतिवेदन में शोधार्थी सम्पूर्ण अध्ययन का विवरण देता है। समस्या प्रधान से शोध के अन्तिम परिणाम प्रस्तुत करता है।

जहाँ तक शाब्दिक अर्थ की बात करें शोध प्रतिवेदन 'Research Report' अंग्रेजी शब्दों का पर्याय है। Research अर्थात् Re+search पुनः खोजना होता है। Report अर्थात् प्रतिवेदन। Research अर्थात् किसी वस्तु या विषय अथवा व्यक्ति से संबंधितज्ञान को प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित ढंग से किए जाने वाले प्रयास को अनुसंधान कहा जा सकता है। Report अर्थात् किसी निश्चित कार्य को पूरा करने में किए गये कार्यविधि को निश्चित प्रारूप में प्रस्तुत किया जाना प्रतिवेदन है। शोध प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण अनुसंधान का महत्वपूर्ण अंग है। इसे निम्नलिखित परिभाषा से और अच्छे ढंग से समझ सकते हैं।

प्रतिवेदन को तैयार करना अनुसंधान की अंतिम अवस्था है और इसका उद्देश्य रूचि रखने वाले लोगों को अध्ययन के सम्पूर्ण परिणाम को पर्याप्त विस्तार में बतलाना है एवं इस तरह व्यवस्थित करना है कि पाठक तथ्यों को समझने एवं स्वयं के लिए निष्कर्षों की प्रामाणिकता का निष्क्रिय बन जाए।

शोध प्रतिवेदन का उद्देश्य

प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के पीछे शोध प्रतिवेदक के अनेक उद्देश्य रहते हैं। उनमें प्रमुख उद्देश्य निम्न हैं–

1. शोध कार्य के महत्व को दूसरे तक पहूंचाना
2. ज्ञान अभिवृद्धि के लिए
3. दूसरों के निष्कर्ष का प्रमाणीकरण करना
4. भविष्य के शोध के लिए उपयोगी
5. प्रमाणिकता की परीक्षा अथवा सत्यसत्य की जाँच
6. शोध उपाधि प्राप्त करना

शोधकार्य के महत्व को दूसरों तक पहुंचाना

शोध से प्राप्त नये ज्ञान 'स्वामित्व' का अधिकार समाज का रहता है, व्यक्ति का अथवा शोधार्थी का नहीं। इसलिए शोधार्थी को शोध कार्य पूर्ण रूप से शोध प्रतिवेदन में प्रस्तुत करना चाहिए। ऐसा करना शोधार्थी का नैतिक कर्तव्य है। इच्छुक पाठकों तक नये ज्ञान को पहुंचाने का माध्यम प्रतिवेदन है। इस माध्यम से ही शोधार्थी अन्यों तक शोध के महत्व को भी पहुंचाता है।

ज्ञान वृद्धि के लिए

शोध हमेशा अज्ञात की खोज करता है। शोधार्थी को शोध से जो ज्ञान प्राप्त होता है और उससे जो लाभ मिलता है उसे अन्यों को उपलब्ध करा देना ही प्रतिवेदन का उद्देश्य है। इस उद्देश्य पूर्ति से लोगों की 'समझ' वृद्धिगत होती है।

दूसरों के निष्कर्षों का प्रमाणीकरण

शोध प्रतिवेदन में शोध विषय के सन्दर्भ में दूसरों के निकाले हुए निष्कर्षों की सत्यासत्यता की जांच की जाती है। शोध प्रतिवेदन ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शोधार्थी दूसरों से कुछ नया सीखता है और दूसरों को कुछ नया सिखाता है। पहले के शोधार्थियों ने उसके शोध विषय के सन्दर्भ में जो निष्कर्ष निकाले हैं, आज का शोध यदि उसके शोध विषय के पहले के शोध विषय की विकसित कड़ी होगी तो पहले शोधार्थी उनके निष्कर्षों की सत्यता को प्रमाणित करेगा और बाद में अपने शोध के निष्कर्ष निकालेगा।

भविष्य के शोध के लिए उपयोगी

शोध प्रतिवेदन में शोधार्थी नये खोजे गये तथ्यों की चर्चा करता है। इस चर्चा में वह उन तथ्यों का जिनका उसने अध्ययन किया है, उतना ही अर्थ निरूपण करके निष्कर्ष निकालता है, ऐसे मे उन नये तथ्यों का सूक्ष्म अध्ययन करने के लिए कोई दूसरा शोधार्थी उस पर अन्य उपकल्पना करके शोध करता है। इसे ही कहते हैं पहले के, शोधार्थियों के प्रतिवेदन में मिले हुये संकेत जो नये शोधार्थी को प्रेरित करते हैं। इसी से नये ज्ञान को अस्तित्व में लाने की श्रृंखला कायम रहती है।

प्रमाणिकता की परीक्षा अथवा सत्या–सत्यता की जांच

शोध के सम्पूर्ण कार्य की प्रमाणिकता की जांच उसी समय की जा सकती है जब वह लिखित और शोध प्रतिवेदन के स्वरूप मे सादर किया गया हो अन्यथा यह संभव नहीं। प्रतिवेदन में शोध कार्य के प्रत्येक स्तर को शोधार्थी परिपूर्ण स्तर पर प्रस्तुत करने के का प्रयत्न करता है। पाठक, उस प्रत्येक स्तर शोधार्थी ने योग्य साधनों की प्रमाणित प्रविधि का उपयोग कर और सटीक विश्लेषण प्रणाली को लागू करके परिणामों को प्राप्त किया है अथवा नहीं इसका निरीक्षण परीक्षण कर सकता है। शोधार्थी के निष्कर्ष और उस पर आधारित सिद्धांत्त और सामान्यीकरण वैज्ञानिक और तर्कपूर्ण है अथवा नहीं इसकी जांच भी कर सकता है।

शोध उपाधि प्राप्त करना

शोध प्रतिवेदन संबंधित विश्वविद्यालय में प्रस्तुत करना यह शोधार्थी के अनेक उद्देश्यों में से एक महत्व का उद्देश्य है। यह उद्देश्य व्यक्तिगत है। प्रस्तुत किया हुआ शोध प्रतिवेदन संबंधित उपाधि प्रदान करने के लिए परिपूर्ण माना गया तो शोधार्थी संबंधित शोध उपाधि उस विश्वविद्यालय से प्राप्त करता है।

शोध प्रतिवेदन के प्रकार

शोध प्रतिवेदन को मुख्य रूप से वर्गीकरण करने के दो आधार हैः–

1. अभिगम के आधार पर।
2. प्रस्तुतीकरण के आधार पर।

अच्छे प्रतिवेदन की विशेषतायें

अच्छे शोध प्रतिवेदन अनेकानेक विशेषताओं से परिपूर्ण रहते हैं। साधारणतः नीचे दी गयी विशेषताएं किस प्रतिवेदन में होगी उस प्रतिवेदन को अच्छा प्रतिवेदन कहकर सम्बोधित किया जाता है।

1. शोध प्रतिवेदन सुन्दर और आर्कषक स्वरूप में होना चाहिये लेकिन ऐसा करते समय उनका अतिरेक नहीं करना चाहिये, आकर्षकता और सुन्दरता की मर्यादा शीर्षक, आलेख यहाँ तक रखना चाहिए। छायाचित्र बनाने के लिये बेलबुटी छपाई का उपयोग नहीं करे अथवा रंगीन कागजों का उपयोग भी प्रतिवेदन लिखने के लिए ना करें।
2. प्रतिवेदन को सुलभ स्पष्ट और सुग्राह्य स्वरूप में प्रस्तुत करना चाहिए, इसके लिये अतिश्योक्तिपूर्ण भाषा अलंकार कहावतों आदि का उपयोग नही करें।
3. प्रतिवेदन में किये गये तथ्यों का पूर्ण विश्लेषण वैज्ञानिकता और तर्क के आधार पर ही किया होना चाहिए अन्यथा पाठकों की समय यह होगी कि प्रतिवेदन आदर्श और कल्पना पर आधारित है।
4. एक ही तथ्य को बार–बार प्रतिवेदन में प्रक्षेपित नहीं करना चाहिए।
5. प्रतिवेदन में ऐसे सभी स्रोतों का स्पष्ट उल्लेख करना चाहिए जहां से तथ्य और जानकारी संकलित की गयी है। इच्छुक व्यक्ति उल्लेखित स्त्रोंतों के आधार पर तथ्यों और जानकारी की जांच कर सके।
6. शोधकर्त्ता को कमियों कपट और समस्याओं का स्पष्टीकरण प्रतिवेदन में देना चाहिए इससे प्रतिवेदन यथार्थवादी बनता है और भविष्य में शोध करने वालों के लिये मार्गदर्शक बनता है।
7. प्रतिवेदन में शोधकर्त्ता को ऐसे संकेत अथवा चिन्ह प्रयुक्त करने चाहिये जो भविष्य के संशोधन में उपयोगी रहे।
8. शोध प्रतिवेदन में ऐसी सूचना देता है जो पक्षपात–विहीन रहती है लेकिन इसके साथ–साथ रचनात्मक और उपयोगी भी रहती हैं। ये सूचनायें यदि समझ निर्माण करने वाली न हो तो शोधकर्त्ता को उन्हें नहीं देना चाहिए।

शोध प्रतिवेदन का प्रारूप

शोध प्रतिवेदन जिस आकृति में प्रस्तुत किया जाता है उसे शोध प्रतिवेदन प्रारूप कहते हैं। प्रारूप को निम्न मुख्य विभागों में विभाजित किया जाता हैः–

प्रारंभिक खंड

आवरण पृष्ठः इसमें सामान्यतः निम्न सूचना रहती है–

अध्ययन का शीर्षक

मनोवैज्ञानिक शोध का शीर्षक एक पृष्ठ पर अलग से लिखा जाना चाहिए। शीर्षक के नीचे शोधकर्ता का नाम था उसके संस्थान जिससे वे संबंधित हैं का उल्लेख होना चाहिए।

प्रस्तावना का आमुख

प्रस्तावना को एक अलग पृष्ठ पर लिखना चाहिए। इसका कोई अलग से शीर्षक नहीं होता है। इसमें मुख्य रूप से शोधकर्ता शोध समस्या की पृष्ठभूमि तैयार करने की दृष्टि से शोधकर्ता संबंधित अध्ययनों का समीक्षात्मक रूप से वर्णन करता है। शोध के उद्देश्य को परिकल्पना के रूप में उल्लेख किया जाता है। शोध में एक या अधिक परिकल्पना हो सकती है।

सारणियों की सूची

सारणियों की सूची प्रदान की जाती है।

आरेखों की सूची

आरेखों की सूची प्रदान की जाती है।

प्रतिवेदन का मुख्य भाग

प्रस्तावना या आमुख

प्रस्तावना में विषय का सर्वसाधारण परिचय, समस्या प्रस्तावना तथा परीक्षण के लिए प्रस्तुत की गई उपकल्पना आदि शामिल है।

अध्ययन की अभिकल्पना

इसमें अध्ययन के लिए आवश्यक प्रकार के आंकड़ों की प्रकृति, उनके संग्रहण में प्रयुक्त औजार व युक्तियाँ और उनके एकत्र करने की विधि के विषय में लिए गये निर्णयों का व्यापक वर्णन होता है। अनुसंधान समिष्ट की परिभाषा, प्रतिदर्श के साइज की युक्ति, संगित, प्रतिचयन की विधि, उन व्यक्तियों की संख्या जो भागीदारी के लिए तैयार ना होने के कारण अलग कर दिये गए या जिन्होंने अध्ययन के विभिन्न चरणों में भाग नहीं लिया और क्यों, कहां, कब और किस प्रकार के आंकड़े संग्रहित किये गये, आंकड़ों के एकत्र करने में प्रयुक्त औजार व युक्तियाँ और उनकी विश्वसनीयता व वैद्यता, प्रयोग की विधि व साथ में कल्पनाओं का विवरण वर्गीकरण, चरों का वर्गीकरण व हेरफेर, उपचरों की प्रकृति, परीक्षार्थियों की

दिये गये निर्देश, साक्षात्कार कर्ताओं व प्रेक्षकों की विशेषताएं और उन्हें दिये गये प्रशिक्षण के प्रकार, आंकड़ों के किन किन प्रकार के विश्लेषण किए गये, अपनाई गई सांख्यिकी विधियों और उनको चुनने के कारण, और आँकड़ों को किस प्रकार व्यवस्थित कर विश्लेषण व व्याख्या के लिए प्रस्तुत किया जायेगा आदि का उल्लेख करता है।

आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या

इस भाग में शोधकर्ता समस्या, परिणाम तथा प्राप्त निष्कर्षों का उल्लेख करता है। इसमें शोधकर्ता शोध से प्राप्त आंकड़ों की व्याख्या करता है। वर्तमान शोध के परिणाम के पहले के परिणामों से मेल खाते हैं कि नहीं या उनसे भिन्न है। शोध परिकल्पनाओं की पुष्टि हो रही है कि नहीं। यदि शोध में परिकल्पनाओं की पुष्टि नहीं हो पा रही है तो उन कारणों पर भी प्रकाश डाला जाता है जिससे ऐसा हुआ हो।

सारांश एवं परिणाम

इस भाग में शोधकर्ता यह लिखता है कि प्रयोग या शोध में किस प्रकार के तथ्य प्राप्त हुए। आंकड़ों के विश्लेषण में किस प्रकार की सांख्यिकी विधियों का उपयोग किया जाता है। लिखते समय यह ध्यान देना आवश्यक होता है कि प्राप्त आंकड़ों के आधार पर किसी भी प्रकार के अनुमान तथा निष्कर्षों का उल्लेख नहीं होना चाहिए। निष्कर्षों को संक्षिप्त रूप में परिक्षित परिकल्पनाओं से सीधा संबंधित करते हुए प्रस्तुत किया जाता है। वह यह घोषणा करते हैं कि अध्ययन के परिणाम परिकल्पनाओं को स्वीकार करते हैं या अस्वीकार। यह निष्कर्ष वर्तमान सिद्धांत में उठाये गये प्रश्नों के उत्तर प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त अनुसंधान उन अनुतरित प्रश्नों की सूची बना सकता है जो अध्ययन की अवधि में उठे और जिनके लिए वर्तमान समस्या की जांच के विस्तार से बाहर आगे अनुसंधान की आवश्यकता है यदि परीक्षण के अधीन क्षेत्र में आगे अनुसंधान लाभदायक प्रतीत नहीं होता और समस्या के लिए नए उपगमन की आवश्यकता है तो अनुसंधान को सुझाव देने चाहिए। सारांश यह है कि निष्कर्षों की चर्चा व प्रस्तुति से पाठक को पूर्णता व निश्चित लाभ का आभास होना चाहिए।

सन्दर्भ खंड

इस खंड में ग्रन्थ सूची व परिशिष्ट होते हैं। इस भाग में उन अध्ययनों या लेखकों को आकारिद क्रम में लिखा जाता है जिन्हें अध्ययनों में शामिल किया गया था। सन्दर्भ को विशेषकर इस प्रकार लिखा जाता है–

Anderson, R.L. and Beneroft, T.A. (1952) Statistical Theory in Research. New York: MC Grawhill

ग्रन्थ सूची के बाद परिशिष्ट दिया जाता है। इसमें शोधकर्ता शोध में प्रयुक्त परीक्षणों, विस्तृत सांख्यिकी गणना आदि को रखता है।

शोधप्रतिवेदन की प्रमुख समस्याएं:– प्रत्येक शोध का प्रतिवेदन लिखना एक जटिल और कठिन कार्य लगता है इसके पीछे के अनेक कारणों में से कुछ प्रमुख कारण जो शोध के सामने समस्याओं के रूप में खड़े रहते हैं। उनकी चर्चा नीचे की गयी है।

बौद्धिक स्तर की समस्या

सर्व सामान्य जनता के ज्ञान का स्तर ध्यान में रखकर प्रतिवेदन लिखना सम्भव है क्या यह विवादास्पद प्रश्न है। यदि सर्वे सामान्य को समझे ऐसे प्रतिवेदन लिखना शोधार्थी ने निश्चित किया तो उसमें मौलिकता की कमी होगी। यदि शोधार्थी ने यथार्थ के आधार पर बुद्धि का उपयोग कर प्रतिवेदन लिखा तो उसका बौद्धिक स्तर इतना होता है कि वह साधारण पढ़े हुये व्यक्ति के आकलन के बाहर की बात होती है। इसलिये शोधार्थी को प्रतिवेदन ऐसा लिखना चाहिए कि जिसमें शोध का गम्भीरता से प्रस्तुतीकरण होते हुए भी भाषा सरल हो और जहां संभव हो तथा सारणी आलेख, चित्र, छायाचित्र आदि का उपयोग करना चाहिये।

विषयानुकूलता की समस्या

शोध प्रतिवेदन पूर्णत निरपेक्ष और निष्पक्ष रखना और उसमें किसी भी प्रकार का मिथ्याकरण नहीं आने देना, ये उद्देश्य रहे तो भी शोधार्थी पर पड़ा हुआ समाज का प्रभाव, उसके मूल्य, आदर्श, भावना, व्यवहार और आदतें इनका स्पर्श उसके लेखन में दिखाई पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में विद्वान पाठक को मन मे प्रतिवेदन की पूर्ण विषयानुकूलता के सन्दर्भ से संशय उत्पन्न होता है। इसलिए शोधार्थी को किसी भी प्रभाव में न आते हुए प्रतिवेदन लिखना चाहिये।

भाषा की समस्या

प्रतिवेदन की भाषा कैसी होनी चाहिए यह समस्या बहुत बड़ी है। आधुनिक संशोधक पूर्णतः वैज्ञानिक रहने से प्रतिवेदन के तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली का उपयोग करना अनिवार्य रहता है। ऐसी शब्दावली यदि प्रतिवेदन मे बार–बार आयी तो इस प्रतिवेदन को क्लिष्ट और पाडित्यपूर्ण माना जाता है। किन्तु यह साधारण मनुष्य के समझने से बाहर हो ऐसा मानकर उस शोध प्रतिवेदन का अवमूल्यन भी किया जाता है।

संकल्पना की समस्या

विस्तृत ओर बड़े तथ्य कुछ शब्दों में संकल्पना के माध्यम से प्रस्तुत किये जाते है। शोध में ऐसी अभिव्यक्ति व्यवहारिक आवश्यकता है। सामाजिक विज्ञान में संकल्पना अभिव्यक्ति के शास्त्र अभी तक पर्याप्त विकसित नही हुए है। इसलिए तथ्यों को स्पष्ट करने के लिये अनेक बातों को विस्तृत रूप में लिखना आवश्यक है।

सत्य कहने की समस्या

प्रतिवेदन में सत्य कहना एक सर्वाधिक क्लिष्ट समस्या है। शोधार्थी को पूरा विश्वास रहता है कि जिस सत्य का वह रहस्योद्घाटन करेगा उसका प्रभाव समाज के किसी वर्ग पर पड़ेगा। जिस वर्ग पर सत्य का विपरीत प्रभाव पड़ता है वह वर्ग शोधकर्त्ता का विरोधी बन जाता है। इस प्रकार की परिस्थिति न सामने आये और कुछ व्यक्ति जो विरोधी वर्ग से सम्बन्धित है। बदले की भावना से कष्ट न दे, इसलिये शोधार्थी सत्य का उद्घाटन करने से डरता है अथवा सत्य की अभिव्यक्ति अस्पष्ट रूप में करता है जो संशय का वातावरण बनाती है। अतः सत्य की अभिव्यक्ति करने के लिये शोधकर्त्ता को निडर होना पड़ेगा अथवा प्रतिवेदन में सत्य की प्रस्तुति नही की जा सकेगी।

निष्कर्ष

किसी भी समस्या पर शोध करके उसका निष्कर्ष लेना ही महत्वपूर्ण नही होता है, बल्कि उसे एक वैज्ञानिक तरीके से प्रतिवेदन करना भी उसका मुख्य उद्देश्य होता है। प्रतिवेदन तैयार करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि उसके प्रस्तुतिकरण का स्वरूप इतना विस्तृत न हो कि उसमें अनावश्यक सूचनाएं भर जाए ओर यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इतना संक्षिप्त भी न हो उसमें आवश्यक सूचनाएं आने से रह जाये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

गुडे डब्लू जे हॉट, पी. के. (1981): मेथड्स इन सोशल रिशर्च

मेक गुइन, जेफ जे. (1990): एक्सपेरिमेंटल साइकोलॉजी

सिंह, अरूण कुमार, (2001) शिक्षा मनोविज्ञान, पटना, भारती भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूर्टस

त्रिपाठी, जगपाल (2007): मनोविज्ञान एवं शिक्षा में शोध प्रद्धतियाँ, एच. पी. भार्गव बुक हाउस, 4/230, कचहरी घाट आगरा।

कोठारी सी. आर. (2011) न्यू ऐज इन्टरनेशनल पब्लिशर्स न्यू दिल्ली।

फेस्टिंगर एण्ड कार्टजः रिसर्च मैथड इन बिहेवरियल सांइस।

डॉ. विजय जरारे, 1995' शोध प्रणाली' ए.बी.डी. पब्लिशर्स, जयपुर।